B-I(H) Paper ~~Sociology~~ II

Discuss Weber's concept of ideal types as methodological tool for the analysis of Social Phenomena.

मैक्स वेबर के आदर्श प्रारूप के सिद्धांत का वर्णन करें?

Max Weber 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के जर्मनी के एक प्रमुख समाजशास्त्री थे। वे Hegel तथा Karl marx के विचारों से परिचित थे। किंतु उन्होंने अपने लेखों में इन विचारकों के विचारों का समर्थन नहीं किया, बल्कि खंडन किया। जहाँ तक सामान्य सामाजिक नियम को प्रतिपादन का प्रश्न है, Marx तथा Max Weber के विचारों में समता देखने को मिलती है, किंतु आर्थिक निश्चयवाद के सम्बन्ध में वे marx से असहमत थे। Max Weber ने यह विचार दिया कि विभिन्न घटनाएँ अन्तः सम्बन्धित हैं। अतः किसी एक कारक को ही एक मात्र निर्णायक कारक मान लेना उचित नहीं है। इसी तरह उन्होंने Hegel के इस विचार का समर्थन नहीं किया कि तत्व दार्शनिक पद्धति समाजशास्त्रियों को सामान्यीकरण प्रस्तुत करने में मदद कर सकती है। इनके अनुसार समाजशास्त्रियों का मुख्य कार्य सामाजिक क्रिया का सार्वभौमिक नियम प्रस्तुत करना है जो कि सामाजिक क्रियाओं के अर्थपूर्ण बोध द्वारा संभव है।

Max Weber ने यह विचार दिया कि समाजशास्त्रियों को सामान्यीकरण प्रस्तुत करना चाहिए, अर्थात् इस तरह का निष्कर्ष प्रस्तुत करना चाहिए जो सभी समाजों पर लागू हो सके। किंतु उन्होंने सामाजिक घटनाओं की जटिलता और परिवर्तनशीलता का भी अवलोकन किया और बताया कि सामाजिक घटनाएँ एवं परिस्थितियाँ सभी समाजों में एक समान नहीं रहती हैं। साथ ही एक समाज विशेष में भी विभिन्न समयों में सामाजिक घटनाओं एवं परिस्थितियों में परिवर्तन हो सकता है। अतः किसी एक सामाजिक परिस्थिति का अध्ययन कर नियम प्रस्तुत किया जाएगा तब वह नियम केवल उसी समाज पर लागू हो सकता है जिसका अध्ययन कर नियम प्रस्तुत किया जाएगा। Max Weber ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि एक समाज विशेष में भी विभिन्न समयों में सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण सामाजिक नियम सार्वभौमिक नहीं हो सकते हैं किंतु Max Weber सार्वभौमिक नियम या सामान्यीकरण प्रस्तुत करने में बहुत अधिक दिलचस्पी रखते थे। फलस्वरूप उनकी इस दिलचस्पी और सामाजिक घटनाओं की जटिलता और परिवर्तनशीलता के गुणों ने उन्हें आदर्श प्ररूप (Ideal types) की अवधारणा विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

Max Weber ने नियम दो तरह के हो सकते हैं। एक प्रकार का नियम वास्तविक और निश्चित होता है। इस तरह का नियम वास्तविक परिस्थितियों से सम्बन्धित होता है। इस तरह के नियम अक्सरहाँ भौतिक और प्राकृतिक विज्ञानों में प्रतिपादित किए जाते हैं। दूसरे तरह के वे नियम हैं जो काल्पनिक एवं आदर्श परिस्थितियाँ, जो वास्तव में नहीं पायी जाती हैं, के वर्णन से सम्बन्धित है। इसका मतलब

Scanned with CamScanner

कि वे दूसरे प्रकार के नियम वास्तविक समस्याओं के वर्णन से सम्बन्धित नहीं हैं। इस तरह के नियमों को max Weber ने आदर्श प्ररूप कहा है। इनके अनुसार सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में सार्वभौमिक नियम के रूप में वास्तविक और निश्चित नियम प्रस्तुत करना संभव नहीं है। इसलिए उन्होंने समाजशास्त्र के क्षेत्र में सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिए आदर्श प्ररूप का निर्माण करने पर विचार दिया।

max Weber ने सामाजिक वास्तविकता को समझने के लिए तथा उनके बारे में सामान्य नियमों की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से आदर्श प्ररूप की अवधारणा विकसित किया। max Weber ने आदर्श प्ररूप में इस बात का उल्लेख किया है कि आदर्श प्ररूप शोध कर्ता के लिए अध्ययन के यंत्र का कार्य करता है जिसका प्रयोग घटनाओं की समानताओं और असमानताओं को ज्ञात करने के लिए किया जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययनों के लिए यह एक मौलिक विधि है। इनके अनुसार आदर्श प्ररूपों का निर्माण अध्ययन के लिए उपकल्पना के निर्माण के लिए किया जाता है। वास्तविक तथ्यों के आधार पर तर्क संगत रूप में एक समाजशास्त्री आदर्श प्ररूप का निर्माण कर सकता है। आदर्श प्ररूप अक्सरहाँ आदर्शात्मक नहीं होते हैं। आदर्श शब्द का सम्बन्ध श्रेष्ठता से नहीं है। इसी तरह मूल्यों से भी इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका उद्देश्य नैतिक आदर्शों का पता लगाने से भी नहीं है। Ideal types के निर्माण का मतलब सामाजिक घटनाओं के परिवर्तनशील तत्वों में से समानता के आधार पर सबसे महत्वपूर्ण तत्वों को कुछ सैद्धांतिक श्रेणियों में बांट लेना है। इस तरह के वर्गीकरण द्वारा जिस types का निर्माण होगा उसे ही max Weber ने Ideal types कहा है। ये आदर्श प्ररूप ऐसे प्ररूप हैं जो एक तरह की सम्पूर्ण घटना या व्यवहार या क्रिया का प्रतिनिधित्व कर वास्तविकता को व्यक्त करते हैं। इसलिए ये प्ररूप आदर्श हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि ये types एक सामाजिक वैज्ञानिक को घटनाओं के अध्ययन में यथार्थता लाने में काफी मदद करते हैं। इसलिए एक वैज्ञानिक के लिए ये types आदर्श हैं। यद्यपि आदर्श प्ररूप का निर्माण वास्तविकता के आधार पर तर्क संगत रूप में किया जाता है फिर भी यह वास्तविकता के बराबर नहीं होता है।

max Weber भी आदर्श प्ररूप की अवधारणा सामाजिक वास्तविकता को समझने तथा उसके बारे में सामान्य नियमों का निर्माण करने से सम्बन्धित हैं। इनके आदर्श प्ररूप की अवधारणा के सम्बन्ध में यह भी कहा जा सकता है कि इन्होंने केवल आदर्श प्ररूप की अवधारणा ही प्रस्तुत नहीं की बल्कि प्रोटेस्टेन्ट आचार, नौकरशाही, सामाजिक क्रिया, सत्ता आदि का इस अवधारणा के आधार पर अध्ययन कर यह प्रमाणित किया कि यह अवधारणा सामाजिक वास्तविकताओं को समझने में उपयोगी है। max Weber ने अपनी इस अवधारणा में इस बात का भी उल्लेख किया है कि आदर्श प्ररूप कोई निश्चित प्ररूप नहीं है। अतः भिन्न-भिन्न समाजशास्त्री

Scanned with CamScanner

एक ही समस्या के अध्ययन के लिए भिन्न-भिन्न आदर्श प्ररूपों का निर्माण कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जब किसी घटना का अध्ययन करने के लिए विभिन्न समाजों के समाजशास्त्री आदर्श प्ररूपों का निर्माण करेंगे तब भिन्न-भिन्न समाजों के समाजशास्त्री भिन्न-भिन्न आदर्श प्ररूपों का निर्माण कर सकते हैं। Max Weber ने अपने इस सिद्धांत में इस मत का उल्लेख किया है कि आदर्श प्ररूपों का निर्माण एक अध्ययन कर्ता के लिए साध्य या अंतिम लक्ष्य नहीं है, बल्कि साध्य या अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति का एक साधन है। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि आदर्श प्ररूप प्रतीतिक होता है क्योंकि इसमें अध्ययनकर्ता उन्हीं विशेषताओं या तथ्यों को सम्मिलित करता है जो उसके दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होता है।

Max Weber ने आदर्श प्ररूप के तीन प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया है:

(1) आदर्श प्ररूप का निर्माण कर्ता द्वारा किया के एक विशेष उद्देश्य या अर्थ के लिए किया जाता है। यह उद्देश्य वस्तुनिष्ठ नहीं होता बल्कि प्रतीतिक या व्यक्तिनिष्ठ होता है।

(2) आदर्श प्ररूप 'सब कुछ' का वर्णन या विश्लेषण नहीं करता है बल्कि यह किसी सामाजिक घटना के महत्वपूर्ण पक्षों की व्याख्या करने से सम्बन्धित रहता है।

(3) आदर्श प्ररूप का प्रयोग ऐतिहासिक समस्याओं या घटनाओं के अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए किया जाना चाहिए। कोई भी आदर्श प्ररूप अंतिम नहीं है। आदर्श प्ररूप में परिवर्तनशीलता का गुण पाया जाता है। अर्थात् घटनाओं में परिवर्तन के साथ-साथ आदर्श प्ररूप भी बदलते रहते हैं।

Max Weber ने आदर्श प्ररूप की अवधारणा में इसके महत्व की भी चर्चा की है। इनके अनुसार आदर्श प्ररूप के निर्माण से अध्ययन कर्ता को अनेक सुविधाएँ प्राप्त होती है। आदर्श प्ररूप एक सामाजिक वैज्ञानिक अध्ययन में यथार्थता, प्रमाणिकता, विश्वसनीयता एवं क्रमबद्धता लाने में योगदान देता है। आदर्श प्ररूप के निर्माण से सामाजिक घटनाओं एवं सामाजिक तथ्यों का विश्लेषण सरल एवं संभव हो जाता है। यह घटनाओं की एकता एवं समानता को समझने में भी योगदान देता है। यह सामाजिक वास्तविकता को समझने तथा उसके सम्बन्ध में सामान्य नियमों का प्रतिपादन करने में भी योगदान देता है। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि उपकल्पना का निर्माण करना किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन के लिए आवश्यक माना जाता है। आदर्श प्ररूप उपकल्पनाओं के निर्माण में सहायक होकर अध्ययन को वैज्ञानिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

Max Weber ने जैसा कि पहले भी लिखा जा चुका है, न केवल आदर्श प्ररूप की अवधारणा या प्रकृति का वर्णन किया जाता है बल्कि सामाजिक क्रिया और सत्ता के आदर्श प्ररूपों का निर्माण भी किया है। इन्होंने सामाजिक क्रिया के चार आदर्श प्ररूपों का निर्माण किया है जो निम्नलिखित है:-

T.T.O

A

(i) परम्परागत क्रिया (Traditional Action)
(ii) मूल्यांकनात्मक क्रिया (Evaluative ,,)
(iii) तार्किक क्रिया (Rational ,,)
(iv) प्रभावात्मक क्रिया (Effective ,,)

Max Weber ने सत्ता के भी तीन आदर्श प्ररूपों का निर्माण किया है जो निम्नलिखित हैं:-

(i) परम्परागत सत्ता (Traditional Authority)
(ii) तार्किक वैधानिक सत्ता (Rational Legal ,,)
(iii) करिश्माई सत्ता (Charismatic ,,)

Criticism (आलोचना)

Max Weber का उपयुक्त सिद्धांत कुछ रूपों में दोषपूर्ण प्रतीत होता है जो निम्नलिखित हैं:-

(1) आदर्श प्ररूप के निर्माण के लिए Max Weber ने किसी वस्तुनिष्ठ या वैषयिक सिद्धांत (Objective theory) का उल्लेख नहीं है। फलस्वरूप विभिन्न व्यक्ति विभिन्न रूपों में आदर्श प्ररूपों का निर्माण कर सकते हैं, उदाहरणार्थ ही Max Weber ने सामाजिक क्रिया के चार आदर्श प्ररूपों और सत्ता के तीन आदर्श प्ररूपों का निर्माण किया था। दूसरा व्यक्ति सामाजिक क्रिया और सत्ता के Max Weber द्वारा बनाये गए आदर्श प्ररूपों से अधिक या कम आदर्श प्ररूपों का भी निर्माण कर सकता है। इसका मतलब कि आदर्श प्ररूप काल्पनिक प्ररूप है। काल्पनिक प्ररूप अवैज्ञानिक प्ररूप कहा जा सकता है। फलस्वरूप अवैज्ञानिक कहा जा सकता है। अतः यह सिद्ध होता है कि आदर्श प्ररूप का निर्माण समाजशास्त्रीय अध्ययन को अवैज्ञानिक बना देगा।

(2) Max Weber ने यह विचार दिया कि समाजशास्त्रियों को सार्वभौमिक नियम के रूप में आदर्श प्ररूप का निर्माण करना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि आदर्श प्ररूप वास्तविक और मूर्त प्ररूप नहीं है। जब आदर्श प्ररूप वास्तविक नहीं है तब उनका पुनरपरीक्षण करना संभव नहीं होगा। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि वह नियम जिसका पुनरपरीक्षण नहीं किया जा सकता, वैज्ञानिक नियम नहीं कहा जा सकता। अतः आदर्श प्ररूप, जिसकी सार्थकता की जाँच नहीं की जा सकती, एक नियम का स्थान नहीं ग्रहण कर सकता।

(3) Max Weber ने सत्ता के आदर्श प्ररूपों का वर्णन करते हुए तार्किक-वैधानिक सत्ता का उल्लेख किया है। इनके अनुसार आदर्श प्ररूप विशुद्ध प्ररूप हैं जो वास्तविक प्ररूपों को समझने में मदद देते हैं। Max Weber के सत्ता के तार्किक-वैधानिक प्ररूप के सम्बन्ध में यह कहा है कि यह एक विशुद्ध प्ररूप नहीं

Scanned with CamScanner

है बल्कि दो प्ररूपों का मिला जुला प्ररूप (Synthetic types) है जिसका आधार न केवल तर्क या विधान है बल्कि दोनों ही है। यदि Max Weber का यह विचार उचित मान लिया जाए कि आदर्श प्ररूप विशुद्ध प्ररूप है तो उनका सत्ता के आदर्श प्ररूप के निर्माण से सम्बन्धित विचार गलत प्रतीत होता है एवं यदि उनके सत्ता के आदर्श प्ररूपों के निर्माण को सही माना जाए तब यह कहा जा सकता है कि Ideal types न केवल विशुद्ध प्ररूप हो सकते हैं, बल्कि मिले-जुले प्ररूप भी हो सकते है।

S. N. Choudhary
L. N. M. U

Scanned with CamScanner